हिमाच्छादित गाँव में आगजनी, शांतिकुंज बना बेघरों का सहारा

शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल अपने संकल्प एवं ख्याति के अनुरूप एक बार फिर पीड़ित मानवता की सेवा में तत्पर दिखाई दिया। इस दल ने उत्तरकाशी जिले के ओसला गाँव में पहुँचकर वहाँ २५ दिसम्बर को लगी भीषण आग से जलकर पूरी तरह नष्ट हो गये ३८ मकानों में रहने वाले परिवारों को अगले ही दिन पहुँचकर तत्काल आवश्यकता की चीजें-भोजन, आवास, बरतन, कपड़े आदि सामग्री वितरित की। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में दो फीट बर्फ की चादर थी, सारी सहायता सामग्री खच्चरों के माध्यम से पीड़ितों तक पहुँचायी गयी।

शांतिकुंज के आपदा प्रबंधन दल ने उत्तराखण्ड में आपदा की हर घड़ी में पीड़ितों की सहायता करते हुए प्रशासन का विश्वास हासिल किया है। इसी के परिणाम स्वरूप उत्तरकाशी के जिलाधिकारी ने ओसला गाँव में आग लगने की सूचना शांतिकुंज को तत्काल दी और पीड़ित परिवारों तक राहत सामग्री पहुँचाने का अनुरोध किया। सूचना मिलते ही शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी के निर्देशन में सक्रिय हो गया और पीड़ित परिवारों के लिए राहत सामग्री के सेट तैयार कर लिए। मीडिया को संबोधित करते हुए श्री गौरीशंकर जी ने कहा कि युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने

एक विश्व परिवार की संकल्पना की थी, शांतिकुंज उसी को चरितार्थ करते हुए उत्तराखंड प्रांत को अपना निकटतम परिवार मानता है तथा जहाँ इसकी सुख-समृद्धि के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है, वहीं आपदा की हर घड़ी में दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा अनुभव करते हुए उनकी सेवा का हर संभव प्रयास करता है।

शांतिकुंज का ११ सदस्यीय आपदा प्रबंधन दल दिनांक २६ दिसम्बर को प्रात: ४ बजे दो वाहनों में राहत सामग्री लेकर आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ० प्रणव पण्ड्या जी से प्रेरणा-मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लेकर घटना स्थल के लिए रवाना हुआ। सर्वश्री रामसहाय शुक्ल, जमुना विश्वकर्मा, विजय रावत, महावीर देवांगन इसका नेतृत्व कर रहे थे। सायंकाल यह दल दो फीट बर्फ से आच्छादित ओसला गाँव पहुँचा, जहाँ सी.डी.एम. श्री सेमवाल ने उनका स्वागत किया। आपदा प्रबंधन दल में नई टिहरी के डॉ० वी.के.जोशी एवं उनके साथी भी शामिल हुए। दल ने प्रशासन के सहयोग से आगजनी से प्रभावित प्रत्येक परिवार को राहत सामग्री के सेट प्रदान किये। इसमें प्रत्येक परिवार को खाद्यान्न के अंतर्गत १० किलो चावल, १० किलो आटा, २ किलो दाल, २ किलो चीनी, २०० ग्राम चाय, २०० ग्राम दूध पावडर, २ किलो नमक, २ किलो तेल, तत्काल भोजन के लिए बिस्किट, ब्रेड, नमकीन, परमल आदि के पैकेट वितरित किये गये। प्रत्येक परिवार को अस्थाई आवास के निर्माण के लिये २ नग त्रिपाल प्रदान किये गये। आपदा प्रबंधन दल ने हर परिवार को बाल्टी, मग, ४ थाली, ४ गिलास, २ कटोरी, १ लोटा, १ भगोनी, चम्मच प्रदान किए। हर परिवार को ५ कम्बल, ५ स्वेटर, महिलाओं और बच्चों के कपड़े भी दिये गये। सहायता सामग्री प्राप्त करने वालों में आसलु, चमारुलाल, सुरेन्द्र, तिरुलाल, जगुठिया, सायबुलाल, जीपुरी, जीतु, सजन्तु, दीपूलाल आदि के परिवार शामिल थे।

आपदा प्रबंधन दल के साथ शांतिकुंज एवं नई टिहरी का चिकित्सक दल भी आवश्यक दवाइयों के साथ घटना स्थल पर पहुँचा था। उन्होंने पीड़ितों का परीक्षण कर उपचार के लिए नि:शुल्क दवाइयाँ भी प्रदान कीं। ☯

कृपया ध्यान दें

हमारे पाठक परिजन ध्यान रखें कि 'प्रज्ञा चैनल', जो विगत २४ नवम्बर २००७ से आरंभ हुआ है, गायत्री परिवार का अपना निजी चैनल नहीं है। परिजनों की अपेक्षा रहती है कि इसमें वह सब कुछ होना चाहिए, जो मिशन कहता है। जन-जन से अंशदान लेकर खड़ा अखिल विश्व गायत्री परिवार अभी किन्हीं उद्योगपति द्वारा आरंभ किए गए इस चैनल द्वारा अपने विचार कुछ ही मात्रा में अभिव्यक्त कर पा रहा है। अपनी स्थिति ऐसी नहीं है कि २४ घण्टे मिशन की ही गतिविधि दिखाने वाला अपना निजी चैनल आरंभ हो सके। इसमें आने वाले सभी कार्यक्रमों से मिशन की विचारधारा का सरोकार हो, जरूरी नहीं। अतः गायत्री परिजन मन में कोई संताप न रखें। प्रतीक्षा करें परिवर्तन की।

गायत्री परिवार का वार्षिक खेल दिवस

गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज ने २० दिसम्बर, गीता जयंती पर अपना वार्षिक खेल दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में प्ले वे से लेकर कक्षा ८ तक के विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता, एकाग्रता और खेल भावना को परखने के लिए खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। नीबू चम्मच दौड़, गेंदों को उछालते हुए आगे बढ़ना, गेंदों को शरीर के आगे-पीछे घुमाते हुए मंजिल तक बढ़ना, दो ईंटों को आगे बढ़ाते हुए उन पर चलना, बोरा दौड़, सेफ्टी पिन की चेन बनाना जैसी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुईं।

खेल दिवस का शुभारंभ विद्यापीठ के विद्यार्थियों द्वारा बैण्ड धुन के साथ मुख्य अतिथि देवंविवि के कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का स्वागत करने के साथ हुआ। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने ध्वजारोहण किया। खेल शिक्षक श्री विक्रांत ने प्रतियोगिता आरंभ होने से पूर्व सभी प्रतिभागियों को खेल भावना और परस्पर सहयोग के साथ नीति-नियमों के पालन के संकल्प कराये।

आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि अब तक गायत्री विद्यापीठ ने राज्य व अंतर्राज्यीय स्तर पर स्काउट-गाइड, योग, ताइक्वाण्डो के अलावा विभिन्न प्रतियोगिताओं में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने खेल को विद्यार्थियों में आंतरिक ऊर्जा को विकसित करने का सशक्त माध्यम बताया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को देव संस्कृति विवि. के कुलपति डॉ. मिश्र, डॉ. ए.के दत्ता, डॉ. कर्मयोगी, मेजर राजवीर सिंह, शरद पारधी, श्री आर.एस. चतुर्वेदी, श्री राममहेश मिश्र ने सम्मानित किया। विभिन्न खेलों में अंशुमान, प्रफुल्ल, लोकेन्द्र, सूर्यप्रकाश, शिवम, अविनाश, सौमित्र, विराट, गौरव, हेमन्त, ऋषिकमल, कु. माधवी, सजल, कु. निहारिका, शर्मिष्ठा, समीक्षा, अंजलि, स्वेता, कु. श्रद्धा को प्रथम स्थान मिला, तो वहीं अंकित, प्रेरणा, निखिल, प्रतिभा, सावित्री, सूर्यांश, सौरभ, श्रेया, शान्तनु, ओमप्रकाश, कु. निष्ठा, मैत्रयी, ऋचा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किये।

विद्यापीठ के प्रभारी प्रधानाध्यापक ने कहा कि खेल बच्चों के लिए विशेष रूप से आवश्यक है, क्योंकि इससे उनमें शारीरिक-मानसिक विकास एवं टीम स्पिरिट का विकास होता है, जो पढ़ाई के लिए नितान्त आवश्यक है। खेल प्रतियोगिता को सम्पन्न कराने में गायत्री विद्यापीठ के आचार्य-आचार्याओं की विशेष भूमिका रही। देशभक्ति गीतों, नारों के साथ नौनिहालों में उल्लास भरते हुए श्री देवाशीष, श्री सुभाष दास ने हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में कार्यक्रम का संचालन किया। ☯

कणाद मण्डल द्वारा कुष्ठ रोगियों की सेवा

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में सक्रिय विद्यार्थियों के कणाद स्वाध्याय मंडल ने कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए समर्पित दिव्य प्रेम सेवाश्रम में विद्यार्थियों के अंशदान से एकत्रित धन से प्रेरणादायी पुस्तकों से सुसज्जित एक लघु पुस्तकालय की स्थापना की। इसके साथ ही उन्होंने बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रेरित करने हेतु स्टेशनरी भी वितरित की। कड़ाके की सर्दी से बचने के लिए कणाद मंडल ने कुष्ठ रोगियों और उनके बच्चों के बीच गर्म वस्त्र भी वितरित किये।

कणाद मण्डल के सदस्य १८ दिसम्बर को दिव्य प्रेम सेवाश्रम पहुँचे और वहाँ दीपयज्ञ का आयोजन किया, जिसमें कई कुष्ठ रोगियों ने देव दक्षिणा के रूप में नशा छोड़ने का संकल्प भी लिया। मंडल के सदस्य पीयूष त्रिवेदी ने श्रोताओं को आयुर्वेद से जुड़ी रोचक एवं प्रेरक जानकारियाँ भी प्रदान कीं। इस मंडल ने झुग्गी-झोपड़ियों में रह रहे गरीब लोगों के बीच भी गर्म वस्त्र वितरित किये। दीपयज्ञ एवं सेवायज्ञ के अवसर पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन के पदाधिकारी, विश्वविद्यालय के उद्यान विभाग के प्रभारी श्री ज्ञान मिश्र एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे। ☯

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के स्वाध्याय मण्डल

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक जीवन शैली के अभ्यास, सामाजिक-पारिवारिक दायित्वों के अहसास, परमार्थ परायणता के विकास आदि के उद्देश्य से आध्यात्मिक स्वाध्याय मण्डलों का गठन किया गया है। ये स्वाध्याय मण्डल सरस्वती, ब्राह्मी, वैष्णवी, कात्यायनी, वशिष्ठ, व्यास, मैत्रेयी, निवेदिता, लक्ष्मीबाई जैसे नामों से जाने जाते हैं। स्वाध्याय मण्डलों के समन्वयक श्री नरेन्द्र सिंह के अनुसार ये मण्डल पर्यावरण, नारी जागरण जैसी सामाजिक गतिविधियों पर विचार-विमर्श करते एवं सक्रियता अपनाते हैंऔर सेवा-सहयोग के अवसरों पर अपने उल्लास की शानदार अभिव्यक्ति करते हैं। विवि का प्रत्येक विद्यार्थी किसी न किसी स्वाध्याय मण्डल में अवश्य शामिल है।

पूरे आध्यात्मिक वैभव के साथ हुआ सन् २००८ का स्वागत ..... (पृष्ठ १ से आगे ......)

किया। उन्होंने कहा कि लोग नये वर्ष के उल्लास के नाम पर अपने धन, स्वास्थ्य और विवेक का नाश करते हुए जो फूहड़ जश्न मनाते हैं, वह उचित नहीं। क्या ये अपने जीवन को यहीं तक सीमित मानते हैं? यदि हम जीवन में सुख और प्रगति चाहते हैं तो हमें संयम, सेवा, साधना, श्रद्धा संवर्धन आदि के पथ पर ही चलना होगा। नये वर्ष का शुभारंभ भी ऐसा ही होना चाहिए।

वर्ष २००८ के पहले दिन शांतिकुंज में युवाशक्ति का बाहुल्य था। पटना, बिहार से २०० नवयुवकों का एक समूह श्री मनीष कुमार के नेतृत्व में शांतिकुंज आया था। वर्ष २००७-०८ की संधि वेला में इन नवयुवकों के लिए विशेष युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया था। इनमें से तीन विद्यार्थी तो ऐसे थे, जो शांतिकुंज का आशीर्वाद ग्रहण करने के पश्चात् आई.ए.एस. की ट्रेनिंग के लिए मसूरी जा रहे हैं। क्षेत्र में विद्या विस्तार वर्ष के सघन आयोजनों की व्यस्तता के बावजूद शांतिकुंज में इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालु-साधकों की उपस्थिति नि:संदेह अत्यंत उत्साहवर्धक रही। ☯

रामसेतु को बचायें, इसे ...

(पृष्ठ १ से आगे ......)

➤नासा ने वर्ष २००२ में उपग्रह से रामसेतु के चित्र खींचकर उसे १७-१८ लाख वर्ष पुराना बताया है, जो वाल्मीकि रामायण में भगवान् श्रीराम द्वारा रामसेतु बनाये जाने की पुष्टि करता है।

➤यह मानवी सभ्यता एवं तकनीकी का सबसे पुरातन अजूबा है।

➤विश्व धरोहर घोषित होने पर यह आध्यात्मिक पर्यटन का बड़ा आकर्षण बन जायेगा, जिससे देश को करोड़ों डॉलर की आय होगी।

➤मदुरै के प्रतिष्ठित सागर वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. मोहनलाल तथा समुदायिक संगठन न्यास के श्री ए. महबूब वाचा व एल. लाजपति राय ने रामसेतु के टूटने पर समुद्र का जल प्रवाह तीव्र होने के कारण पानी गर्म होने और उसके प्रभाव से शांत समुद्र की ३६०० जीव-जन्तु की प्रजातियों के नष्ट होने का खतरा बताया है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने भी अपनी चिंता व्यक्त की है।

➤प्रो. जी. विस्टर राजमानिकम एवं सागर तटीय क्षेत्रों के विशेषज्ञ एवं तुतीकोरियन पोर्ट ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष प्रो. टाड एस. मूर्ति के अनुसार रामसेतु के कारण सन् २००४ की सुनामी लहरों से काफी बचाव हुआ था, अन्यथा केरल और सुदूर कोंकण क्षेत्र भी सुनामी की चपेट में होता।

➤तमिलनाडु मछुआरा संघ के अध्यक्ष श्री कुपुराम जी एवं कई अन्य विशेषज्ञों के अनुसार इसके टूटने से समुद्री जीव एवं वनस्पतियों से रोजगार पाने वाले २० लाख लोग बेरोजगार हो जायेंगे।

➤रामसेतु के कारण यह क्षेत्र भारत एवं श्रीलंका की निजी जल सीमा है। रामसेतु के टूटने पर मन्नार की खाड़ी स्वत: ही अंतर्राष्ट्रीय जल सीमा बन जायेगी और विदेशी सैनिक जहाजों की बेरोकटोक आवाजाई शुरू हो जायेगी। सामरिक दृष्टि से यह हमारे लिए बहुत खतरनाक है।

➤रामसेतु के शांत समुद्र वाले क्षेत्र में समुद्री किनारों पर काली रेत में थोरियम का विश्व का सबसे बड़ा भण्डार है, जो १ लाख ४० हजार मेगावाट बिजली की आवश्यकता पूरी कर सकता है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने भी कहा है कि हम थोरियम से विश्व की सबसे सस्ती बिजली बना सकते हैं।

वैकल्पिक व्यवस्था भी है

लोग जिन जहाजों के लिए मार्ग बनाने के लिए रामसेतु तोड़ने की हिमायत कर रहे हैं, उनके लिए पम्बन से लेकर धनुषकोटि एवं रामेश्वर के बीच मण्डपम गाँव से होकर नहर के रूप में मार्ग निकालने का विकल्प है। इस मार्ग में मात्र रेत के टीले हैं, जिन्हें आसानी से हटाया जा सकता है। यह प्रस्तावित सेतु समुद्र परियोजना से १० कि.मी. छोटा और कम खर्चीला भी है। ☯

मनुष्य का व्यवहार ही वह दर्पण है, जिसमें उसका व्यक्तित्व भलीभाँति देखा जा सकता है।